नरक-चौदस

आदि काल से भारत में अच्छाई पर बुराई की जीत का विशेष महत्व रहा है। सभी ऐसी घटनाएँ जिनमें सत ने असत पर विजय प्राप्त करी उस दिन को एक प्रतीक रूप में उत्सव या त्योहार के रूप में मनाया जाता है। नरक चौदस की प्रचलित कथा के अनुसार आज के रोज़ भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस को मारा था। कृष्ण के उस दुष्ट-दलन की स्मृति में नरक-चौदस मनाई जाती है। इस रोज़ घर की साफ सफाई करने का महत्व है।

साफ सफाई वाकई मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। यह रोज़ का नियम होना चाहिए। तो इसके लिए साल में एक विशेष पर्व की क्या आवश्यकता?

यदि हम इस पर्व की नीति-कथा (fable) को पूरी तरह जाने तब ही इसके वास्तविक उद्देश्य को समझ पाएंगे-

भारत के पूर्वोत्तर भाग (आज का north-east) में नरकासुर नाम के राक्षस का राज्य था। वह बहुत शक्तिशाली था अतएव मदांध हो गया था। उसकी कैद में उस समय सोलह हज़ार कन्याएँ थी जिंनका उसके राज्य में शारीरिक शोषण हो रहा था। ऋषियों द्वारा इसकी सूचना कृष्ण को मिलने पर वह द्वारका से उत्तर-पूर्व नरकासुर के राज्य में जाकर नरकासुर का वध किया। जनता स्वतंत्र हो कर प्रसन्न थी। पर कृष्ण अभी भी खिन्न थे। कारण- उन कन्यायों का क्या होगा जो की नरकासुर के राज्य में दूषित? हुई थीं। उनमें से कुछ तो गर्भवती भी थीं। उनका समाज में क्या भविष्य होगा? क्या उनके लिए मात्र वैश्यालय ही आसरा था? इन चिंताओ से कृष्ण व्यथित थे। अंत में उन्होंने निर्णय लिया कि वह उन सभी सोलह हज़ार पीड़ित कन्याओ से विवाह कर उन्हें अपनी पत्नी का दर्जा देंगे। इस प्रकार उनके गर्भ में पल रहे शिशु कृष्ण कि संतान माने जाएंगे, और महान कृष्ण की पत्नी होने के कारण कन्यायों के माता-पिता उन्हें अपने परिवार में सादर स्वीकार करेंगें।

नरकासुर की मृत्यु के अगले दिन सोलह हज़ार कन्यायों से कृष्ण के सामूहिक विवाह की खुशी में दीपोत्सव मनाया गया जो आज भी नरक-चौदस के बाद दीपावली के रूप में मनाया जा रहा है।

हो सकता है कि उक्त राक्षस के राज्य में कन्याएँ नारकीय जीवन व्यतीत कर रहीं थीं, इसीलिए उसे नरकासुर कहा जाने लगा। बाद में नरक को गंदगी का पर्याय मानते हुए इसे साफ-सफाई का त्योहार माना जाने लगा।

कृष्ण ने द्वापर में ही, आदतन बलात्कारी (habitual sex offender) को मृत्यु-दंड की व्यवस्था दी। इसके साथ ही यह भी स्थापित किया की बलात्कारी महिला (आज की survivor) का कोई दोष नहीं। वह समाज में इस दुर्घटना के पहले जैसे सम्मान की अधिकारिणी है।

कृष्ण का यह कार्य एक प्रकार से त्रेता के अहिल्या-उद्धार से अधिक महत्वपूर्ण और महान था।